

**नौकरी की किताब**  
**सत्र 4: शैली और संरचना और बुद्धि की प्रकृति**  
**जॉन वाल्टन द्वारा**

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 4 है, शैली और संरचना, और बुद्धि की प्रकृति।

**परिचय [00:24-00:57]**

खैर, अब समय आ गया है कि हम बुक ऑफ जॉब की शैली और इसकी संरचना के बारे में बात करें। तो, यहाँ हमें इस बारे में सोचना है: क्या यह पुस्तक वास्तविक है? कुछ लोग इस प्रश्न का उत्तर यह पूछकर देंगे कि क्या यह इतिहास है या कल्पना? मुझे लगता है कि यह एक झूठा द्वंद्व है। मेज पर केवल यही दो विकल्प हैं।

**शैली का महत्व [00:57-4:16]**

और इसलिए, हमें यह सोचना होगा कि पुस्तक क्या कर रही है और यह कैसे कर रही है। अब यह शैली का सवाल है, लेकिन हमें यह समझना होगा कि शैली एक मुश्किल चीज़ है। शैली हमें यह जानने में मदद करती है कि किताब कैसे पढ़ी जाए। आप जानते हैं, अगर हम कोई रहस्य पढ़ रहे होते, तो हम उसे जीवनी पढ़ने की तुलना में अलग तरह से पढ़ते। यदि हम संपादकीय पढ़ रहे हैं, तो यह कॉमिक स्ट्रिप पढ़ने से अलग है। जब हम चीज़ों की शैली को समझते हैं तो हम उन्हें अलग तरह से पढ़ते हैं।

लेकिन शैली क्या करती है या शैली की पहचान साहित्य के एक टुकड़े को समान साहित्य के समुदाय में स्थान देती है। यह उन चीज़ों की पहचान करता है जो उसके जैसी हैं, और ऐसा करके, यह हमें पढ़ने के लिए रणनीतियाँ देता है जो समग्र रूप से समूह पर आधारित होती हैं। इसका मतलब है कि किसी शैली की पहचान को सार्थक बनाने के लिए, हमें सेट में अन्य सदस्यों को रखना होगा, अन्यथा, यह वास्तव में हमें पढ़ने में मदद नहीं करता है।

यहीं पर हमें अय्यूब के साथ कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक ओर, हम इसे ज्ञान साहित्य के रूप में आसानी से पहचान सकते हैं। यह एक व्यापक श्रेणी है, लेकिन हम जानते हैं कि

ज्ञान साहित्य की कई अलग-अलग शैलियाँ हैं। लोकोक्ति, कहावत ज्ञान साहित्य की एक विधा है। यह एक संवाद से कहीं अलग है; ज्ञान संवाद हो सकता है। और इसलिए, यह कहना कि यह ज्ञान साहित्य है, हमें एक व्यापक श्रेणी प्रदान करता है और हमें अपेक्षा की कुछ भावना देता है, लेकिन यह वास्तव में हमें कोई रणनीति नहीं देता है।

और यहीं पर हमें नौकरी की पुस्तक के साथ एक समस्या का सामना करना पड़ता है। ऐसा कुछ नहीं है। ज्ञान के व्यापक दायरे के अलावा साहित्य का कोई समुदाय नहीं है। यह सच है, मेरा मतलब है, हमारे पास साहित्य के टुकड़े हैं जो संवाद हैं और अय्यूब के पास इसमें कुछ संवाद हैं। हमारे पास साहित्य के टुकड़े हैं जो ज्ञान भजन हैं, और अय्यूब के पास ज्ञान भजन है। हमारे पास साहित्य के टुकड़े हैं जो प्रवचन हैं, और अय्यूब के पास कुछ प्रवचन हैं। तो, इसमें शैलियों के टुकड़े और टुकड़े हैं जिन्हें हम अन्य टुकड़ों से जानते हैं।

लेकिन जब आप अय्यूब की पुस्तक को समग्र रूप से देखते हैं, तो ऐसा कुछ भी नहीं है। ऐसी अन्य पुस्तकें भी हैं जो प्राचीन विश्व में निर्दोष पीड़ाओं से संबंधित हैं, लेकिन वे वास्तव में अय्यूब की तरह बिल्कुल भी नहीं हैं। तो, परिणामस्वरूप, हमारे पास पुस्तक के भीतर कई शैलियाँ हैं। हमारे पास प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया में कई समान परिदृश्य हैं, लेकिन हमारे पास वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं है जो नौकरी की किताब जैसा हो, जिसका अर्थ है कि हम उन सामान्य श्रेणियों से थोड़ा बाहर हैं जिन्हें हम कर सकते हैं से निपटें।

### **एक विचार प्रयोग के रूप में कार्य [4:16-5:57]**

यह ज्ञान साहित्य है, और यह पढ़ने की रणनीति के बारे में हमारे कई प्रश्नों के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन कर सकता है। ज्ञान साहित्य का एक रूप, और यही वह है जिसे मैं प्रस्तावित करना चाहूंगा, विचार प्रयोग का रूप है। एक विचार प्रयोग में, आप एक परिदृश्य का प्रस्ताव करते हैं। यह एक ऐसा परिदृश्य है जिसे किसी मुद्दे की खोज के लिए आवश्यक सभी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है। पुनः, हम पाते हैं कि यीशु दृष्टांतों में ऐसा करते हैं। दृष्टांत वास्तविक घटनाओं के बारे में कोई विवरण, कथा नहीं हैं। वे ऐसी घटनाएँ हैं, जो कुछ अर्थों में वास्तविक हो सकती थीं, लेकिन दूसरे अर्थ में नहीं हैं। किसी मुद्दे के बारे में सोचने में हमारी मदद

करने के लिए विवरणों को एक विशेष तरीके से एक साथ रखा जाता है। तो, दृष्टांत विचार प्रयोग का एक रूप है।

मैं नहीं मानता कि अय्यूब एक दृष्टांत है, लेकिन मुझे लगता है कि यह विचार प्रयोग का दूसरा रूप है। एक विचार प्रयोग में, यह एक तरह से क्या होगा-अगर परिदृश्य जैसा है। अगर हमारे सामने ऐसी स्थिति हो तो क्या होगा? मुद्दा यह दावा करने का नहीं है कि विचार प्रयोग में घटनाएँ घटित हुईं, बल्कि वे अपनी दार्शनिक शक्ति कल्पनाशील उपकरण की यथार्थवादी प्रकृति से प्राप्त करते हैं।

### **चरम सीमाओं को धकेलना [5:57-7:28]**

इसके बारे में सोचें, और यह वास्तव में हो सकता है, लेकिन यह अधिक चरम है। अय्यूब की किताब में हर चीज़ चरम पर है। हम देखेंगे कि हर चीज़ यथासंभव चरम सीमा तक फैली हुई है। यह वे चरम सीमाएँ हैं जो पुस्तक को कार्यान्वित करती हैं। यदि अय्यूब कम धर्मी होता, वह अधिकांश समय बहुत अच्छा रहता, तो किताब काम नहीं करती क्योंकि आप कह सकते थे, "ओह, उसने कुछ चीज़ें गलत कीं," और यही समस्या हो सकती है। यदि उसकी पीड़ा कम नाटकीय थे, यदि यह धीरे-धीरे आया होता या वास्तव में इतना गहन, व्यापक नहीं होता, तो हम कह सकते थे, "ठीक है, उसे थोड़ा कष्ट हो रहा है। हर किसी को थोड़ा-बहुत कष्ट होता है।" और, आप जानते हैं, शायद हम इसका हिसाब दे सकते हैं। थोड़ा-सा अनुचित व्यवहार और थोड़ा-सा कष्ट, और ठीक है, यही वह दुनिया है जिसका हम अक्सर सामना करते हैं। लेकिन नहीं, नहीं, मैं नौकरी की किताब, हर चीज़ को चरम सीमा तक खींच लिया गया है। ताकि मेज पर कोई आसान उत्तर न बचे, देखें कि यही रणनीति है। सभी आसान उत्तर हटा दें, और आपको दार्शनिक विचार, ज्ञान बिंदु से निपटने के लिए छोड़ दिया जाएगा।

### **एक साहित्यिक रचना के रूप में कार्य [7:28-11:21]**

फिर यह प्रश्न कि क्या घटनाएँ वास्तविक हैं, ग़लत है। वे लगभग अवास्तविक होने के लिए एक साथ रखे गए हैं फिर भी पर्याप्त रूप से वास्तविक हैं, लेकिन जो हम कल्पना कर सकते हैं उससे कहीं अधिक, अधिक चरम हैं। अब, आइए इस पर थोड़ा विचार करें। यदि यह एक विचार प्रयोग है, तो

कम से कम पुस्तक के कुछ हिस्सों में, हमें इसे एक वास्तविक घटना, एक साहित्यिक रचना के बजाय सिर्फ एक साहित्यिक रचना कहना होगा।

अब पुस्तक के कुछ हिस्से ऐसे हैं जिनके बारे में हर कोई लंबे समय से सहमत है कि वे साहित्यिक रचनाएँ हैं। दोस्तों के भाषण, लोग यूँ ही, यूँ ही बातें नहीं करते। लोग इस अत्यधिक उन्नत भाषा में यूँ ही बात नहीं करते। यहां तक कि हमारे कुछ सर्वश्रेष्ठ वक्ता भी इस तरह से बात नहीं करते हैं। और इसके अलावा, भले ही उन्होंने ऐसा किया हो, भले ही आप कह सकें, ठीक है, प्राचीन दुनिया में उन्होंने ऐसा किया था, और ये वास्तव में स्मार्ट लोग थे और वगैरह, वगैरह, कोई स्टेनोग्राफर नहीं है। प्राचीन विश्व में उनके पास ऐसे आशुलिपिक नहीं हैं जो वहां बैठकर यह सब समझ सकें। मित्रों के भाषण एक साहित्यिक रचना हैं। इसे सभी ने पहचान लिया है।

लेकिन क्या आप देखते हैं कि वह क्या करता है? जैसे ही हम पुस्तक के कुछ भाग को साहित्यिक रचना के रूप में पहचानते हैं, तब हमें यह प्रश्न पूछना पड़ता है कि वह कितनी दूर तक जाता है? इसमें से कितना हिस्सा साहित्यिक रचना है, और कितना हिस्सा सिर्फ घटनाओं का रिकॉर्ड हो सकता है? आपने पंक्ति को कहां खींचा था? और एक बार जब आप यह स्वीकार कर लेते हैं कि पुस्तक के कुछ हिस्से एक साहित्यिक रचना हैं, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहां रेखा खींचते हैं क्योंकि एक साहित्यिक रचना एक विचार प्रयोग में ठीक है।

अब मुझे विश्वास है कि अय्यूब वास्तविक अतीत में एक वास्तविक व्यक्ति था, वह प्राचीन दुनिया में एक बहुत अच्छे व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हो गया था, जिसके साथ वास्तव में निराशाजनक घटनाएं घटी थीं। मुझे लगता है कि वह सचमुच एक ऐसा व्यक्ति है। लेकिन मुझे लगता है कि उनके बारे में यह कहानी एक विचार प्रयोग है जिसमें ज्ञान की अवधारणा की जांच करने के लिए इस प्रसिद्ध व्यक्ति का उपयोग किया गया है। इसलिए, मैं कथा का मूल रूप लेता हूँ। नहीं, मुझे यह नहीं कहना चाहिए कि मूल सामग्री और कथा, जिसका अर्थ है अय्यूब का जीवन, एक व्यक्ति की धार्मिक पीड़ा, वास्तविक अतीत में एक प्रकार का ऐतिहासिक लंगर है। लेकिन मुझे लगता है कि किताब का बाकी हिस्सा एक विचार प्रयोग, एक साहित्यिक रचना है। फिर, चरम सीमाओं का उपयोग, और जिन दार्शनिक मुद्दों को मेज पर लाया जाता है, वे सभी मुद्दों को स्पष्ट करते हैं।

### एक विचार प्रयोग में परमेश्वर के वचन [11:21-12:53]

अब, शायद आप उस विचार से जूझ रहे हैं। इसके बारे में सोचते रहें। शायद आप नहीं हैं, लेकिन हो सकता है कि मेरा अगला कदम ऐसा हो जिसे निगलना और भी कठिन हो। तो, मेरे साथ सोचें, यदि पुस्तक, अधिकांश भाग के लिए, एक विचार प्रयोग है, एक साहित्यिक रचना है, तो क्या यह भगवान के भाषणों के बारे में भी सच है? क्या यह भी एक प्रेरित लेखक है, जो मौजूदा मुद्दे को संबोधित करने के लिए भगवान के मुँह में शब्द डाल रहा है? और यह स्वर्ग में शुरुआती दृश्य के बारे में क्या कहता है? क्या वह भी कोई साहित्यिक रचना है? क्या वह भी एक चरम स्थिति उत्पन्न करने के लिए बनाया गया है? इसके बारे में इस तरह सोचना महत्वपूर्ण हो सकता है। मैं प्रस्ताव कर रहा हूँ कि आप कम से कम इसके बारे में उन शर्तों पर सोचें। याद रखें, पुस्तक की सच्चाई उसके ज्ञान शिक्षण में है, अर्थात्, जिसकी पुष्टि की जा रही है। पुस्तक की सच्चाई को ऐतिहासिकता के स्तर पर किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। यह एक ज्ञान पुस्तक है। और यदि यह एक सोचा हुआ प्रयोग है। इसे चरम सीमा में चित्रित किया गया है।

### नौकरी को एक विचार प्रयोग के रूप में देखने के लाभ [12:53-14:40]

यहां साहित्यिक निर्माण विचार प्रयोग के हिस्से के रूप में स्वर्ग के दृश्य के बारे में भी सोचने का लाभ है। यह हमें यह सोचने की महत्वपूर्ण समस्या से बचने में मदद करेगा कि ईश्वर वास्तव में कैसे काम करता है। यदि यह एक विचार प्रयोग है, तो यह केवल यह कह रहा है कि क्या होगा यदि स्वर्ग में ऐसा कोई दृश्य खुल जाए? यदि बातचीत इसी रूप में हुई तो क्या होगा? यह सब अय्यूब के लिए परिदृश्य तैयार करने के लिए है। क्या आप देखते हैं कि यह उन कुछ चीज़ों से कैसे बचता है जिनसे पाठक अक्सर किताब में जूझते हैं? इसका उद्देश्य ऐसे ईश्वर की तस्वीर व्यक्त करना नहीं है जो शैतान के साथ दांव लगाता है; कुछ लोगों के लिए, यह सोचना एक वास्तविक समस्या रही है कि ईश्वर इस तरह से कार्य करेगा। कुछ लोगों के लिए, वे पुस्तक को देखते हैं, और वे अपने जीवन को देखते हैं, और वे कहते हैं, "शायद भगवान और शैतान मेरे बारे में बातचीत कर रहे हैं। शायद मेरे अनुभव किसी दैवीय दांव के कारण हैं।" यह वह नहीं है जो हमें इस पुस्तक से प्राप्त करना चाहिए।

वह मेज पर कोई विकल्प नहीं है. यह किताब ऐसा नहीं कर रही है। ये स्पष्ट रूप से जटिल मुद्दे हैं और हमारे लिए इस पर विचार करना जटिल है। लेकिन इसके बारे में सोचो.

### **पुस्तक स्वर्गीय चर्चाओं के बारे में नहीं है [14:40-15:47]**

पुस्तक की शिक्षा घटनाओं की वास्तविकता से बंधी नहीं है। पुस्तक का शिक्षण निर्धारित साहित्यिक परिदृश्य से निर्मित होता है। और यदि यह एक सोचा-समझा प्रयोग है, तो उस परिदृश्य को प्रस्तुत करने में काफी रचनात्मकता लगी है। बस इसकी कोशिश। बस इसे आजमाएं ताकि आसान उत्तर सामने आ सकें, और इस बारे में चर्चा की गुंजाइश हो कि हमें दुनिया के बारे में कैसे सोचना चाहिए और भगवान क्या करता है या क्या नहीं करता है। मेरा मतलब यह नहीं है कि वह स्वर्ग में एक सत्र में क्या करता है या क्या नहीं करता है, बल्कि हम ईश्वर और पीड़ा के लिए उसकी जिम्मेदारी के बारे में कैसे सोचते हैं या वह पीड़ा के लिए कैसे जिम्मेदार नहीं है? हम संसार में हमारे सामने आने वाली घटनाओं में ईश्वर की भूमिका के बारे में कैसे सोचते हैं? यह इस बारे में नहीं है कि स्वर्गीय चर्चाओं में क्या चल रहा है।

### **अलंकारिक रणनीति: संरचना और बुद्धि भजन [15:47-20:20]**

तो, उस प्रकार के विचार प्रयोग विचार को ध्यान में रखते हुए, हम इस बारे में बात करना चाहते हैं कि पुस्तक अपने शिक्षण को कैसे पूरा करती है। इसे ही हम आलंकारिक रणनीति कहते हैं। यह इस बारे में बात करता है कि पुस्तक को शाब्दिक रूप से कैसे प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक की संरचना को पहचानना बहुत आसान है। इसका सैंडविचिंग प्रभाव होता है। हमें स्वर्ग के दृश्य और अय्यूब के अनुभवों के साथ एक गद्य प्रस्तावना मिली है। हमारे पास एक गद्य उपसंहार है जहां भगवान अय्यूब को पुनर्स्थापित करता है। तो ये दो बहीखाते हैं।

पुस्तक के बिल्कुल मध्य में, हमारे पास ज्ञान का एक भजन है। कई लोगों ने ज्ञान के उस भजन के बारे में आश्चर्य किया है। सामान्य तौर पर पढ़ने पर कोई भी आसानी से सोच सकता है कि यह जॉब बोल रहा है। अय्यूब अध्याय 27 में बोल रहा है। अध्याय 28 बुद्धि का भजन है। और अध्याय 29 में,

अय्यूब बोल रहा है। यह 28 में कोई नया स्पीकर पेश नहीं करता है। और इसलिए, कुछ लोगों ने मान लिया है कि यह सिर्फ जॉब है जो सीधे बोल रहा है।

लेकिन एक समस्या है। जो खंड 27 में समाप्त होता है वह पुस्तक का संवाद खंड है। 29 से शुरू होने वाला खंड पुस्तक का प्रवचन खंड है। ज्ञान का यह भजन बिल्कुल उनके बीच में है। वास्तव में, यह संवाद अनुभाग से प्रवचन अनुभाग में संक्रमण प्रदान करता है। हम जो पाते हैं, चाहे हम संवाद अनुभाग में देख रहे हों या प्रवचन अनुभाग में, वह यह है कि कहीं भी अय्यूब के पास उस तरह का परिप्रेक्ष्य नहीं है जैसा कि अध्याय 28 में दर्शाया गया है। ज्ञान के भजन में एक स्थिति, एक परिप्रेक्ष्य और अंतर्दृष्टि है जो अय्यूब के पास है एक व्यक्ति के रूप में न तो पहले और न ही बाद में। इसलिए, यह वास्तव में अय्यूब के मुँह से बाहर है।

विकल्प, और जिसे बहुत से लोग अपनाते हैं और मैं उससे सहमत हूँ, वह यह है कि अध्याय 28 में ज्ञान के भजन में, वर्णनकर्ता वापस खेल में आता है। जिसने हमें उपसंहार दिया, मुझे क्षमा करें, प्रस्तावना और उपसंहार, जिसने दृश्य खड़ा किया और उसे निष्कर्ष तक पहुंचाया, वह वापस बीच में आ गया है। और अय्यूब और उसके दोस्तों के बीच बातचीत पूरी होने के बाद वह वापस आता है।

यह संवाद अनुभाग है जो अध्याय तीन से शुरू होता है और अध्याय 27 तक चलता है। अय्यूब और उसके दोस्त बारी-बारी से एक-दूसरे से बात करते हैं, और वह सब खत्म हो जाता है, भाषण छोटे हो जाते हैं। और आखिरी में, ज़ोफ़र के पास कहने के लिए कुछ भी नहीं है। उन्होंने अपनी बात रख दी है। उसने कर लिया। बिलडैड का बहुत छोटा है। संवाद में उनका जोश खत्म हो गया है। याद रखें, यह संवाद प्राचीन विश्व में ज्ञात सबसे बुद्धिमान लोगों के बीच हो रहा है, और आप इसके अंत तक पहुँचते हैं और ज्ञान का भजन बहुत विस्तृत और वाक्पटु तरीके से मूल रूप से कहता है, "क्या आपके पास बस इतना ही है मिल गया? क्या यह बात है? क्या आपको लगता है कि यह बुद्धिमत्ता है? आपने सतह को खरोच तक नहीं किया है।"

और फिर किताब, ज्ञान के उस भजन में, न्याय के बारे में चर्चा की तरह दिखने वाली चीज़ों से हमारा ध्यान हटा देती है। और यह कहता है, "नहीं, आप इसे खो रहे हैं। आप इसे पूरी तरह से खो रहे हैं।"

यह ज्ञान के बारे में है।" इसलिए, मेरा मानना है कि ज्ञान का भजन, पुस्तक के मध्य में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह हमें संवाद से प्रवचन की ओर ले जाता है, क्योंकि यह दर्शाता है कि वास्तव में संवाद खंड ने कुछ भी हासिल नहीं किया है क्योंकि यह एक कथावाचक को वापस उसी स्थिति में ले आता है। हमें अगले भाग की ओर ले जाएँ। और इससे हमें यह देखने में मदद मिलती है कि वास्तव में समस्या क्या है। हम बाद में उस पर वापस आएंगे।

### **संवाद और प्रवचन [20:20-23:30]**

तो, हमें अपना प्रस्तावना और उपसंहार मिल गया है। हमें बीच में ज्ञान का भजन मिला है, और फिर प्रमुख भाग संवाद और प्रवचन हैं। संवाद सबसे पहले आता है। यहीं पर हम अय्यूब और उसके दोस्तों को मुद्दों पर चर्चा करते हुए पाते हैं। और इसलिए, हमारे पास एलीपज और बिलदद, और सोफर हैं, प्रत्येक भाषण देते हैं, और अय्यूब उनका उत्तर देता है। वह संवाद अनुभाग है। यह अध्याय तीन में अय्यूब के विलाप से शुरू होता है और अध्याय चार में एलीपज के भाषण से शुरू होता है और 27 तक जाता है, फिर ज्ञान के भजन और फिर प्रवचनों तक जाता है।

प्रवचन संवादों से भिन्न हैं क्योंकि उनमें परस्पर आदान-प्रदान नहीं होता है। और इसलिए, यहाँ, ये केवल तीन पात्र भाषण दे रहे हैं। अय्यूब 29 से 31 में अपना भाषण देता है, एलीहू 32 से 37 में अपना भाषण देता है, और फिर यहोवा भाषण देता है और वह प्रवचन अनुभाग भरता है।

तो, हमारे पास संवाद और प्रवचन हैं, जिनमें पुस्तक की बहुत सारी कच्ची सामग्री शामिल है। और फिर उपसंहार सब कुछ खत्म कर देता है। अब मुझे लगता है कि यह संरचना हमें अलंकारिक रणनीति को समझने में मदद करती है। यानी, संरचना हमें इस बात पर काम करने में मदद करती है कि मामला कैसे बनाया जा रहा है। मुझे नहीं लगता कि पुस्तक में से कोई भी अंश आसानी से छोड़ा जा सकता है और फिर भी सुसंगत रहेगा और अपने उद्देश्यों को पूरा कर सकेगा। हाँ, वे शाब्दिक रूप से बहुत भिन्न हैं। आपके पास आख्यान है; आपके पास संवाद है; आपके पास प्रवचन है; आपके पास भजन है। वे बहुत अलग हैं, लेकिन वे सभी एक साथ काम करते हैं, और आप उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ सकते हैं और फिर भी उनके पास कुछ ऐसा है जिसमें एक सुसंगत संदेश है।



इसलिए, जैसे-जैसे हम पुस्तक पर काम करते हैं, हम अलंकारिक रणनीति का निर्माण करते जा रहे हैं। हम उस योगदान की तलाश में रहेंगे जो पुस्तक का प्रत्येक भाग करता है क्योंकि हमारा मानना है कि प्रत्येक भाग एक योगदान देता है। हम पुस्तक को एक सुसंगत समग्रता के रूप में मान रहे हैं, न कि ऐसी चीज़ के रूप में जिसे एक चिथड़े की रजाई के रूप में या कई अलग-अलग हाथों से एक साथ फेंक दिया गया हो। इसीलिए मैंने पहले इस विचार के बारे में बात की थी कि यह उन टुकड़ों में से एक हो सकता है जो एक किताब के रूप में एक साथ आते हैं। यदि यह एक साहित्यिक रचना है, यदि इसका निर्माण, रचना, एक ज्ञान संदेश के साथ एक विचार प्रयोग और सभी अंश इसका हिस्सा हैं, तो यह वास्तव में एक पुस्तक के रूप में रचा गया होगा। हालाँकि, प्राचीन विश्व के विद्वान प्रतिभाशाली थे, और वे इसे एक मौखिक रचना के रूप में भी प्रस्तुत कर सकते थे। इसमें सीखने के लिए बहुत कुछ होगा, याद रखने के लिए बहुत कुछ होगा, लेकिन प्राचीन दुनिया के कवियों ने ऐसा किया। होमरिक साहित्य का कुछ हिस्सा अपने आप में काफी लंबा है, और वह मौखिक रूप से प्रसारित किया गया था। इसलिए, यह बताना कठिन है, और अंत में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

### **बयानबाजी की रणनीति और लेखकीय इरादा [23:30-26:17]**

हमें किताब वैसी ही मिल गई है जैसी वह थी। इसमें एक पहचानने योग्य, वास्तव में आसानी से पहचाने जाने योग्य संरचना है। और यही इसे इसकी अलंकारिक रणनीति प्रदान करता है। और इसलिए, उससे, हम पुस्तक के संदेश को समझने का प्रयास करने जा रहे हैं।

अलंकारिक रणनीति हमें बताती है कि लेखक क्या कर रहा है। अलंकारिक रणनीति लेखक की रणनीति है। फिर से, मैं लेखक का उपयोग कर रहा हूँ; यह संचारक के लिए एक तरह का शॉर्टकट है, चाहे वह मौखिक हो या लिखित। यह अलंकारिक रणनीति है जो हमें लेखक के इरादे को देखने में मदद करती है। और यह वह इरादा है जिसका अधिकार है। याद रखें, यह ईश्वर का अधिकार है, लेकिन ईश्वर ने वह अधिकार एक मानव संचारक में निहित किया है। और यदि हमें ईश्वर का आधिकारिक संदेश प्राप्त करना है, तो हमें इसे मानव संचारक के माध्यम से प्राप्त करना होगा। इसलिए, हम हमेशा उस चीज़ की तलाश में रहते हैं जिसे हम लेखक का इरादा कहते हैं। उन्हें क्या मिल रहा है?

मेरा मानना है कि लेखक की मंशा का वह हिस्सा एक विचार प्रयोग है। कुछ भिन्न हो सकते हैं, और यह ठीक है। इससे फर्क पड़ेगा। इसका प्रभाव इस बात पर पड़ेगा कि हम पुस्तक के विभिन्न भागों के बारे में कैसे सोचते हैं। लेकिन अंत में, हम इसी तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं। याद रखें, वफादार व्याख्याकार, उस पुस्तक के संदेश का अनुसरण कर रहे हैं जो ईश्वर द्वारा, एक मानव संचारक, एक मानव उपकरण के माध्यम से, हम तक पहुँचाई गई थी।

बाइबल हमारे लिए लिखी गई थी, लेकिन यह हमारे लिए नहीं लिखी गई थी। और इसलिए, हमें यह समझने की कोशिश करनी होगी कि वह मानव संचारक क्या हासिल कर रहा था। यहीं हमें अधिकार मिलेगा। हमें प्रीलांस करने, उसमें अपनी चीज़ पढ़ने की आज़ादी नहीं है। हमें यह कहने की आज़ादी नहीं है, "ओह, मुझे लगता है कि किताब सचमुच चाहती है कि मैं इस तरह सोचूं।" यदि आप इसे पुस्तक से ही प्राप्त नहीं कर सकते, तो आप इसे ईश्वर से नहीं प्राप्त कर रहे हैं। और फिर यह क्या अच्छा कर रहा है?

इसलिए, हम अपने द्वारा सुझाई गई सभी समस्याओं के साथ-साथ शैली पर भी ध्यान देते हैं। हम अलंकारिक रणनीति पर ध्यान देते हैं, वह सब, हमें प्रेरित पुस्तक में क्या कहना है, इसकी सर्वोत्तम समझ पाने में हमारी मदद करने की कोशिश करते हैं, जैसा कि भगवान ने उनके माध्यम से बताया था, लेखक का इरादा था।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 4 है, शैली और संरचना, और बुद्धि की प्रकृति। [26:17]